सीएसआईआर-सीएमईआरआई का जिज्ञासा कार्यक्रम

- **विभिन्न केंद्रीय विद्यालयों के दो सौ शिक्षकों, छात्रों ने की भागीदारी**
- **संस्थान निदेशक डॉ हरीश हिरानी ने जल शोधन तकनीक की दी जानकारी**

दुर्गापुर. सीएसआईआर-सीएमईआरआई ने गुरुवार को जिज्ञासा कार्यक्रम आयोजन किया. केन्द्रीय विद्यालय (आसनसोल), केन्द्रीय विद्यालय (बर्दवान), केन्द्रीय विद्यालय (चित्तरंजन) और केन्द्रीय विद्यालय (सीएमईआरआई) के दो सौ छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया. अध्यक्षता निदेशक (डॉ) हरीश हिरानी ने की. विषय 'जल शोधन तकनीक' . यह कार्यक्रम संस्थान द्वारा संचालित कार्यक्रमों की श्रृंखला की कड़ी थी. छात्रों को जल शोधन के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी दी गई. डॉ हिरानी ने दूषित पानी और इसके स्रोतों के बारे में विस्तार से बताया. उन्होने कहा कि जल प्रदूषण और प्रदूषण के खतरे का समाज की परिस्थितिकी और स्वास्थ्य-प्रोफ़ाइल पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है. इस समस्या का सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा आर्सेनिक, आयरन और फ्लोराइड के प्रदूषण से प्रभावी ढंग से निपटना है. इस खतरे का प्रभावी ढंग से सामना करने के लिएप्रभावी और पारिस्थितिक रूप से सुरक्षित फ़िल्टर कारतूस और फ़िल्टर माध्यमों का विकास है. ये निस्पंदन तंत्र आसन्न बड़े वैश्विक पीने योग्य जल-संकट परिदृश्य को संलिष्ठ करने में भी मदद करेंगे. संस्थान विकसित जल शोधन तकनीकें आर्सेनिक, फ्लोराइड और पैथोजेन्स से निपटने के दौरान नो-एनर्जी, केमिकल-फ्री, कार्ट्रिज और उत्पाद के सुरक्षित निपटान, आसान संचालन और लागत-प्रभावशीलता के पहलुओं को समाहित करने की कोशिश करती हैं. उन्होंने युवा मन से बड़े पैमाने पर सोसायटी के साथ जुड़ने और विज्ञान और प्रौद्योगिकी जागरूकता के संदेश वाहक होने का आग्रह किया. उन्होंने कहा कि विज्ञान सब कुछ कर सकता है और यह 'स्वच्छ, हरित और स्वस्थ भारत' विकसित करने के लिए वैज्ञानिक कौशल को प्रमाणित करने के लिए संस्थान का संस्थागत दर्शन है. ज्ञान का सच्चा बोध तभी प्राप्त हो सकता है जब अकादमिक शिक्षण को विचार-विमर्श से जोड़ा जाये. इंटरैक्टिव सत्र के दौरान छात्रों ने डॉ हरीश हिरानी और उनके वैज्ञानिकों- डॉ बी रुज, डॉ एन चंदा, डॉ पी बनर्जी, डॉ डी बनर्जी और डॉ पीएस बनर्जी के साथ बातचीत की.